नाटककार डॉ. चतुर्भुज

की स्मृति में

6वाँ

अखिल भारतीय ऐतिहासिक

नाट्योत्सव

2015

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला-जागरण, पटना

www.chaturbhujdrama.com, apriyadarshi76@yahoo.in

सौजन्य: संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

सहयोग: कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

आभार : संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली / उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

कदम–कदम पर क्रांति

...किसानों के लिए

...समाज के लिए

...राष्ट्रहित के लिए

यही है **इफको** की पहचान

हमारा प्रयास जागरूक एवं खुशहाल किसान

चार दशकों से इफको का प्रयास रहा है कि भारत का किसान हर दृष्टि से सम्पन्न बने और इसके लिए इफको को सहकारिता को माध्यम बनाते हुए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कृषि आधारित विकास के लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। इफको को गर्व है कि आज हम किसान भाईयों के चेहरे पर मुस्कान ला पाने में सफल हो पाए।

अपने 5 संयंत्रों और 12 सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से इफको किसानों तक उत्तम गुणवत्त वाले उर्वरकों के माध्यम से मोबाइल फोन के द्वारा भी कृषि क्रांति लाने की चेष्टा कर रही है।

IFFCO live www.iffcolive.com

IFFCO

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

इफको सदन, सी-1, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, साकेत प्लेस, नई दिल्ली-110017

दूरभाष : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

Scanned by CamScanner

सौजन्य : संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, सहयोग : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार
आभार : संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली/उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

छठा अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव- 2015

बिहार, पटना

11 से 17 फरवरी, 2015

सम्पादक

सुनील कुमार सिन्हा

आवरण पृष्ठ

सुधीर कुमार

स्थान

कालिदास रंगालय, पूर्वी गाँधी मैदान, पटना

❖

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www-chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/kalajagran@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष की कलम से ✍

हिन्दी नाटक के भीष्म-पितामह डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में 'कला-जागरण' एवं 'मगध कलाकार' के संयुक्त तत्वावधान में हम पुन: सात दिवसीय 'अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव-2015' का आयोजन कर रहे हैं। ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन विरासत को सुरक्षित रखने का एक अनूठा प्रयास है। हिन्दी में इतिहास सम्मत जीवन चरितात्मक नाटक बहुत कम लिखे गए हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जयशंकर प्रसाद ने किया था, पर उनकी परम्परा का विकास नहीं के बराबर हुआ। यदि कुछ नाटककारों की कृतियों का नामोल्लेख इस दिशा में किया जा सकता है तो नि:संदेह अग्रणी पंक्ति के नाटककारों की श्रेणी में डॉ॰ चतुर्भुज का नाम स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आता है, जिन्होंने पिछली सदी के पाँचवें दशक के बाद अनेक रंगमंचीय ऐतिहासिक नाटकों का सृजन कर हिन्दी नाट्य जगत को समृद्ध करने का स्तुत्य कार्य किया है। उसी महान नाटककार डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में छठी बार 'अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव' के रूप में आयोजन कर हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं। ऐसे ऐतिहासिक नाट्योत्सव के माध्यम से हमारा प्रयास है– आज की पीढ़ी को भारत का गौरवशाली इतिहास, गुलामी की त्रासदी, यंत्रणा, पीड़ा, छटपटाहट और अकुलाहट के साथ-साथ ऐतिहासिक पात्रों से प्रेरणा लेकर भविष्य की सुरक्षा हेतु उन्हें सचेत करना तथा उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार करना। ऐतिहासिक नाटकों का मंचन आग के दरिया में अपने को झोंकना है– मंचन में एक आग है, एक तपिश जिसमें अभिनेता अपने को भस्म करता है। ऐतिहासिक नाटकों के कलाकारों के लिए थिएटर मुक्ति का मार्ग है। समय के साथ अभिनय की शैली में भी बदलाव आया है– ओवर एक्टिंग एवं मशीनी अभिनव से मुक्त ऐसे नाटकों के प्रदर्शन का भरपूर आनन्द हमारे सुधी दर्शक प्राप्त करेंगे- ऐसा हमारा विश्वास है। प्रदर्शन में भाग लेने वाले सभी रंगकर्मियों/रंगनिर्देशकों का हार्दिक अभिनन्दन।

गणेश प्रसाद सिन्हा
अध्यक्ष, कला-जागरण

प्रकाशक

कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा,** अध्यक्ष
C/11, कंकड़बाग कॉलोनी, पटना-20
(मो. 09431622131)
: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1 (मो. 9431066931)

मगध कलाकार : **डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र,** अध्यक्ष
सेवानिवृत्त निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्,
शिवपूजन सहाय पथ, सैदपुर
पटना- 800 004
(मो. 09430212579)
: **डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सचिव**
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6,
श्रीकृष्ण नगर, पटना-800 001
(मो. 09334525657)

अक्षर संयोजक : **फकीर मुहम्मद**

मुद्रक : **वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि.**
अयोध्या अपार्टमेंट (बोर्ड ऑफिस के सामने)
फ्रेजर रोड, पटना- 800 001
9431040914/2222920
vatayanprabhat@gmail.com

Scanned by CamScanner

केशरी नाथ त्रिपाठी
राज्यपाल, बिहार

सत्यमेव जयते

राजभवन, पटना- 800022
दूरभाष: 0612-2217626
फैक्स : 0612-2786184

16 जनवरी, 2015

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि 'मगध कलाकार' और 'कला-जागरण' के संयुक्त तत्वावधान में स्व० डॉ० चतुर्भुज की पुण्य स्मृति में पटना में ऐतिहासिक नाटकों का एक महोत्सव आगामी 11 से 17 फरवरी 2015 तक आयोजित होने जा रहा है।

ऐतिहासिक नाटकों की परम्परा में डॉ० चतुर्भुज के नाटकों की महत्ता उनकी कुशल अभिनेयता के कारण सदा बनी रहेगी। डॉ० चतुर्भुज ने ऐतिहासिकता एवं कल्पनाशीलता के मणिकांचन संयोग से सफल ऐतिहासिक नाटकों का प्रणयन किया है, जो आज भी रंगमंच के लिए सर्वथा उपयुक्त और लोकप्रिय है।

मैं इस 'नाट्य-महोत्सव' की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

(केशरी नाथ त्रिपाठी)
राज्यपाल, बिहार

Scanned by CamScanner

अवधेश नारायण सिंह
सभापति
बिहार विधान परिषद्

Awadhesh Narain Singh
Chairman
Bihar Legislative Council

पत्रांक.............................

Date: ....

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष की बात है कि दिनांक 11 फरवरी, 2015 से 17 फरवरी, 2015 तक पटना में छठा अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में सन् 2010 से मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त तत्वावधान में यह कार्यक्रम लगातार आयोजित होता आ रहा है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

रंगमंच एक सशक्त एवं जीवंत माध्यम है जिसके द्वारा गौरवशाली इतिहास एवं घटनाओं का मंचन किया जाता है। ऐसे सामाजिक कला महोत्सव के उपलक्ष्य पर मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

(अवधेश नारायण सिंह) 13/1/15

2 कौटिल्य मार्ग, पटना-800 001
2 Kautilya Marg, Patna-800 001

Tele : 0612-2215819, 2215245 (O), Fax-2215683
2215617 (R) Mob. : 9431018630

Scanned by CamScanner

राज्य मंत्री
पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

MINISTER OF STATE
DRINKING WATER & SANITATION
GOVERNMENT OF INDIA

राम कृपाल यादव
Ram Kripal Yadav

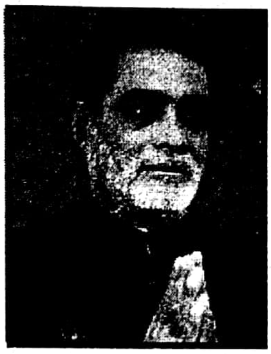

शुभकामना संदेश

आपके पत्रांक 1/MA/Fest. -6/2015 दिनांक 1 जनवरी 2015 से ज्ञात हुआ कि आप पिछले पाँच वर्षों से अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन पटना के कालिदास रंगालय में करते आ रहे हैं। सचमुच रंगमंच प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है और उसे गतिशील बनाए रखना आवश्यक है। कला-जागरण के साथ जुड़कर आपकी संस्था मगध कलाकार इस कार्य को कर रही है इसके लिए मैं गौरव का अनुभव करता हूँ। डॉ० चतुर्भुज ने हिन्दी रंगमंच को अपनी लेखनी के माध्यम से हिन्दी साहित्य और नाट्य जगत को बहुत कुछ प्रदान किया है। इतिहास-पुराण की शुष्क घटनाओं को मनोरंजक तरीके से रंगमंच पर लाया है। मुझे विश्वास है कि उनकी स्मृति में इस तरह का आयोजन रंगकर्मियों के लिए प्रेरक साबित होगा। इतिहास-पुराण की घटनाएँ आज भी हमारे समाज के लिए सम-सामयिक बनी है। उनसे सीख लेने की आवश्यकता है।

दिनांक 11 फरवरी से 17 फरवरी 2015 तक अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के आयोजन के लिए मेरी ओर से आयोजकों एवं भाग लेने वाली संस्थाओं को हार्दिक शुभकामना है।

7/1/2015

(राम कृपाल यादव)

Scanned by CamScanner

बिजेन्द्र प्रसाद यादव
मंत्री
वित्त एवं वाणिज्यकर विभाग,
बिहार, पटना।

आवास : 1, नेताजी मार्ग, पटना-1
दूरभाष सं. : 0612-2217894 (का.)
0612-2205454 (आ.)

bijendraprasadyadav@gmail.com

पत्रांक : 65

दिनांक 22/01/15

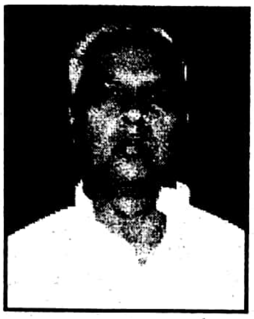

संदेश

यह अत्यन्त ही उत्साहवर्धक है कि मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त तत्वावधान में अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही भारत इतिहास का अभिन्न अंग रहा है। नाटकों के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति की समझ बढ़ती है। वस्तुतः आज की युवा पीढ़ी गौरवशाली इतिहास को भूलती जा रही है। नाट्य महोत्सव से कलाकार ऐतिहासिक घटनाओं की याद ताजा करते हैं। कलाकार, पात्रों के माध्यम से विभिन्न कालखण्डों के प्रेरक व्यक्तित्वों के जीवनवृत्त की बहुआयामी प्रस्तुति करते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान करने की भूमिका अदा करता है।

"अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव" की सुन्दर पहल का स्वागत करते हुए इस अवसर पर स्मारिका के सफल प्रकाशन सहित आयोजनकर्त्ताओं को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ धन्यवाद देता हूँ।

भवदीय

(बिजेन्द्र प्रसाद यादव)

Scanned by CamScanner

विनय बिहारी
मंत्री
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक : ....

33, हार्डिंग रोड पटना-15
दूरभाष : 0612-2215688 (का॰)
: 0612-2230195 (आ॰)
मो॰ : 09431203456

दिनांक :...........................

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि मगध कलाकार और कला-जागरण के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 11 फरवरी से 17 फरवरी, 2015 तक डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन पटना में किया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन किये जाने का निर्णय अत्यंत ही सराहनीय है।

छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में भाग लेने वाले कलाकारों को और स्मारिका के सम्पादन से जुड़े प्रत्येक सदस्य को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विनय बिहारी)

Scanned by CamScanner

श्याम रजक
شیام رجک

मंत्री
खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक : 77 (आ.)

दिनांक 10-01-15

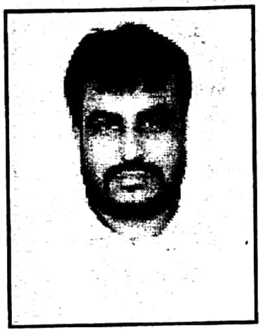

शुभकामना-संदेश

मगध कलाकार एवं कला-जागरण के संयुक्त तत्वावधान में लोकप्रिय ऐतिहासिक नाटककार डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन अगामी दिनांक 11 फरवरी से 17 फरवरी 2015 तक किये जाने एवं इस अवसर पर एक आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन कराये जाने की सूचना पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आज की युवा पीढ़ी अपने गौरवशाली इतिहास को भूलती जा रही है। परन्तु, मगध कलाकार एवं कला जागरण द्वारा अपने नाट्य महोत्सवों में ऐतिहासिक/पौराणिक नाटकों का ही मंचन किया जाता रहा है जो बहुत अच्छी बात है। इस नाट्य महोत्सव में बिहार के विभिन्न क्षेत्रों एवं देश के दूसरे राज्यों की प्रतिष्ठित नाट्य संस्थाओं द्वारा इतिहास की भूली-बिसरी घटनाओं/पात्रों को रंगमंच के माध्यम से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है जो इस महोत्सव को खास बनाती है।

नाट्य महोत्सव के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर आकर्षक स्मारिका के प्रकाशन की कामना करता हूँ।

सधन्यवाद !

(श्याम रजक)

कार्यालय :–ग्राउंड फ्लोर, पुराना सचिवालय, पटना बिहार। दूरभाष :– 0612–2217819, फैक्स :– 0612–2215077
आवसीय कार्यालय :– 20 ए. हार्डिंग रोड, पटना। दूरभाष :– 0612–2205740, दूरभाष+फैक्स :– 0612–2216276, मो०–9431022200
E-mail :- shyamrajak.com@gmail.com website : www.shyamrajak.com

Scanned by CamScanner

FORMER UNION MINISTER OF
HEALTH & FAMILY WELFARE
FORMER UNION MINISTER OF SHIPPING

MEMBER :
- Standing Committee on Tourism, Transport & Culture
- Consulative Committee on Information & Broadcasting

सत्यमेव जयते

Shatrughan Sinha
MEMBER OF PARLIAMENT
(LOK SABHA)

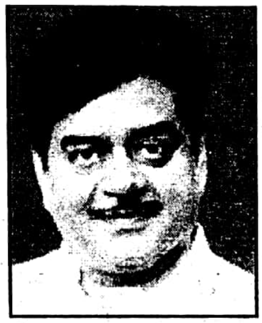

शुभकामना संदेश

ऐतिहासिक नाटकों के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में मगध कलाकार एवं कला जागरण संस्था द्वारा अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन हो रहा है। यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई।

11 फरवरी से 17 फरवरी, 2015 तक आयोजित होने वाली छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है।

इस आयोजन की सफलता के लिए मेरी ढेर सारी शुभकामनाएँ।

(शत्रुघ्न सिन्हा)

CONSTITUENCY ADDRESS : BHUNESHWAR NIWAS, B.P. SINHA PATH, D-BLOCK, KADAM KUA, PATNA, 800003 TEL.: 2721696 FAX: 2721405
DELHI ADDRESS : 10, TALKATORA ROAD, NEW DELHI-110001 TEL. : 23356284-65 FAX : 23720731
MUMBAI ADDRESS : 49, RAMAYAN, 9TH ROAD, J.V.P.D. SCHEME, JUHU, MUMBAI-400 049 TEL. : 26008131-32 FAX : 26000999

Scanned by CamScanner

के॰डी॰ प्रौज्ज्वल
निदेशक

सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार
कमरा संख्या–330, तृतीय मंजिल, विकास भवन
बेली रोड, पटना–800 015

अ.स.प.सं. :

पटना, दिनांक :

शुभकामना संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बिहार राज्य के सुप्रसिद्ध नाटककार डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में छठा अखिल भारतीय नाट्य महोत्सव दिनांक 11 से 17 फरवरी, 2015 को कला जागरण एवं मगध कलाकार के संयुक्त प्रयास से आयोजित है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

मैं अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

(के0डी0 प्रौज्ज्वल)
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, बिहार

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम : डॉ चतुर्भुज

जन्म तिथि : 15/01/1928 ई. निधन: 11/08/2009 ई.

जन्म स्थान : मुहल्ला- महलपर, बिहार शरीफ, जिला-नालन्दा

शिक्षा : (क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में)
(ख) पी-एच.डी., (शोध विषय- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक- एक अध्ययन')

पिता : स्व. मुंशी प्रयाग नारायण

वेबसाइट : www.chaturbhujdrama.com

मगध कलाकार का पता : रोड नम्बर-06, क्वाटर नम्बर-106, श्री कृष्ण नगर, पटना-800001 (बिहार) फोन : 9334525657

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। इन्होंने अपने जीवन के इक्यासी बसंत देखे। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य-लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। सम्पूर्ण जीवनकाल में हिन्दी के माध्यम से नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य ग्रन्थों की रचना भी इन्होंने की है।

2. विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों में इनके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसे:- साहित्य अकादमी के 'हूज हू' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ-146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इनके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। अभी हाल में नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय, मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोध कार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ. चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी-एच.डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :-

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।

5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी-रोटी से जोड़ कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहां प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडिएट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।

Scanned by CamScanner

6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्य प्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्य प्रदर्शन, मनोरंजन-कर से मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।

7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार-प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े-छोटे रंगकर्मी परिचित हैं।

8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थिएटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।

9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार-प्रसार हुआ।

10. फिल्म और रंगमंच के चर्चित कलाकार पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग-विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।

11. नव नालन्दा महाविहार के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देशों के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए.एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक थे।

12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक शैक्षणिक संस्थाएं हैं- एस.यू. कॉलेज, हिलसा/ जमुई में स्थापित स्टेडियम/ रांची समाज कल्याण समिति/ मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष/ महिला महाविद्यालय, खगौल/ प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष/ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।

13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डॉ. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झाँकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आजतक गतिशील है।

14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक-एक अध्ययन'।

15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं- 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।

16. उत्तर-दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थिएटर के संस्थापक निदेशक अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद

Scanned by CamScanner

किया। कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार सरकार के पदाधिकारी कुमार शांत रक्षित को जाता है। भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।

17. डॉ. चतुर्भुज के अन्य कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है।

नाट्य-लेखन :-

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य-लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था- मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य-लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। हर रंग संस्थाओं की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक अभिनीत हो।

19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी हैं अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र-पत्रिकाएं रही हैं- विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।

20. डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो-टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ों नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।

21 उत्तर-प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक नाट्य पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।

22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं। चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।

23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।

24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।

25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे- 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था कि अकस्मात उनकी असामयिक मृत्यु हो गई। पुस्तक अधूरी है। लेकिन उसके प्रकाशन की योजना बन रही है ताकि रंगकर्मी उस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।

26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। **'समुद्र का पक्षी'** ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगज़ेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने स्वयं उसमें भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास **राजदर्शन है**। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीर कासिम के चरित्र

Scanned by CamScanner

पर आधारित है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से लेकर उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित- **'तथागत'**। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।

27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु-मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है, वहीं अरावली का शेर, भीष्म-प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर-पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग-विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्ध धर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।

28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा **'मेरी रंगयात्रा'** शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28. आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन-यापन हेतु उन्होंने छोटी-छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर-राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर-राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग-दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश-विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक-सम्पादन-विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित और प्रसारित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।

30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, राँची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी, दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं- गणतन्त्र की भूमि वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द-प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवमंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव-मस्तानी, झेलम के किनारे, जहाँआरा, हैदरअली, रेडियो नाट्य श्रृंखला के अन्तर्गत जातक कथा पर आधारित तेरह धारावाहिक नाटक आदि।

पुरस्कार/सम्मान :-

31. श्रुति कला परिषद् की ओर से नाट्य लेखन के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार सन् 1994 ई. में, आनन्दाश्रम की ओर से 1997 ई. में सम्मान प्राप्त, सन् 1998 में दि इण्डियन सोसाइटी ऑफ क्रियेटिव आर्ट्स की ओर से सम्मानित, 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, शांति प्रियदर्शी रचना पुरस्कार से 1999 ई. में सम्मानित, सन् 2000 में दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज को शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया, विश्व भारती भाषा साहित्य समागम की ओर से सन् 2003 ई. में सम्मानित। अशोक नगर चित्रगुप्त परिषद् द्वारा सन् 2003 में स्मारिका सम्पादन हेतु सम्मान, वामा

Scanned by CamScanner

वेलफेयर सोसायटी द्वारा 'कला वारिधि 2004' से सम्मानित, स्टेज, पटना द्वारा नाट्य उन्नयन एवं संवर्द्धन हेतु सन् 2004 में डॉ. रंगी-लक्ष्मी स्टेज सम्मान से सम्मानित, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव-राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य-लेखन पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साहित्कार-सम्मान- समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, नाटककार के रूप में सन् 2008 में कृष्णा मूवीज द्वारा सम्मानित। इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य-लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता :-

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक-रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य-प्रशिक्षणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन-संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को भी रेडियो-पत्रकारिता और दूरदर्शन-पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन-काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवतः उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म-पितामह कहे जाते रहे।

चतुर्भुज-साहित्य

रंगमंचीय नाटक :-

पाटलिपुत्र का राजकुमार, कलिंग-विजय, सिकन्दर-पोरस, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, रावण, मेघनाद, कंसवध, श्रीकृष्ण, कर्ण, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, नदी का पानी, भगवान बुद्ध, बाबू विरंचीलाल, मुद्राराक्षस, अरावली का शेर, नूरजहां, शिवाजी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, कृष्ण कुमारी, पीरअली, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, मोर्चे-पर, बहादुरशाह, शाही अमानत, विजय के क्षण, बादल का बेटा, महिषासुर वध, कारागार, चतुर्भुज रचनावली (तीन खंडों में)।

उपन्यास/कथा संग्रहः-

समुद्र का पक्षी-(मनूची के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), राजदर्शन- (मुंगेर का नवाब मीरकासिम के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), तथागत- (भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित) इतिहास बोल उठा-(खोजपूर्ण ऐतिहासिक लेख संग्रह), कमरे की छाया-(उल्लेखनीय कहानी-संग्रह) मेरी रंगयात्रा (आत्मकथा)- डॉ॰ चतुर्भुज के संघर्षमय जीवन की कथा।

इतिहास :-

औरंगज़ेब, भारत के बौद्ध विहार, प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास।

अंग्रेजी/ मैथिली/तमिल ग्रन्थ :-

Memoirs of William Tayler (Commissioner of Patna in 1857), History of the Great Mughals, The Rani of Jhansi (Drama), The Great Historical Dramas, रावण (मैथिली और तमिल अनुवाद नाटक)।

अप्रकाशित- नाट्य शिल्प विज्ञान (हिन्दी), Raavan, Shri Krishn, Kans-Vadh, Pataliputra Ka Rajkumar, Peer Ali (Translated in English)

Scanned by CamScanner

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से
डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मानः-

सन् 2010 : डॉ. जितेन्द्र सहाय- शल्य चिकित्सक और नाटककार

बेस्ट एक्टर : श्री अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, **बेस्ट एक्ट्रेस** : श्रीमती सुचित्रा सिन्हा।

सन् 2011 : श्री गोपाल शरण- रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार

बेस्ट एक्टर : श्री नन्दलाल सिंह **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री उज्ज्वला गांगुली, **श्रेष्ठ निर्देशक** : उपेन्द्र कुमार

सन् 2012 : श्री कृष्णानन्द- ऐतिहासिक उपन्यासकार, वरिष्ठ पत्रकार और नाट्य समीक्षक

बेस्ट एक्टर : श्री अमित श्रीवास्तव, **बेस्ट एक्ट्रेसः** श्रीमती अनीता कुमारी वर्मा

सन् 2013 : श्री गणेश सिन्हा-नाट्य निर्देशक, अभिनेता, और रंग-परामर्शी।

बेस्ट एक्टर : श्री राजवर्द्धन **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री सविता श्रीवास्तव

सन् 2014 : श्री बच्चन लाल- अभिनेता, मेकअप मैन,

मगध कलाकार की ओर से दो वर्षों के लिए डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मानः-

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता : श्रीमती रंजीता जयसवाल,

सन् 2011 : श्री सुनील कुमार सिंह, सुश्री साक्षी प्रिया,

सन् 2012 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, श्री राहुल कुमार

सन् 2013 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, मो. आसिफ इकबाल

सन् 2014 : सुश्री मारिया प्रवीण, विशाल कुमार तिवारी

सन् 2015 : सुश्री कनीज फातिमा, श्री उदित कुमार

मगध कलाकार और कला-जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाटक-पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : **श्री आशीष कुमार मिश्र-** रंगकर्मी और पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान, पटना- पिता-श्री वैद्यनाथ मिश्र

सन् 2013 : **श्री दीनानाथ साहनी-** लेखक, पत्रकार और रंग समीक्षक, दैनिक जागरण, पटना, पिता- श्री रामलाल प्रसाद

सन् 2014 : **श्री ध्रुव कुमार-** रंगकर्मी, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार

सन् 2015 : **श्री साक़िब इक़बाल खाँ-** रंग-पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना/पिता- मो. इसराफिल खाँ।

Scanned by CamScanner

आयोजन समिति

सुमन कुमार
सचिव, कला-जागरण, पटना
09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म हमार देवदास, लागल नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक -डिस्कवरी ऑफ इन्डिया से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटकों में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं-सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर-पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, कालसर्पिणी, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए।

डॉ० अशोक प्रियदर्शी
सचिव, मगध कलाकार, पटना
09334525657

डॉ० चतुर्भुज द्वारा 1952 ई० में स्थापित नाट्य संस्था-'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई० से) को गौरवान्वित करने वाले डॉ० अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रहे। सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवा करते हुए इन्होंने राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों का मंच संचालन किया। विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ० प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा पिछले 20 वर्षों से दर्शकों के बीच चिर-परिचित बनी रही है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र कराने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ० चतुर्भुज के कष्ट-साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। रेडियो, दूरदर्शन, पटना से इनके लिखे कई नाटकों का प्रसारण के साथ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के मंच से डॉ० प्रियदर्शी लिखित क्रान्तिकारी सुभाष, डोमकच, खुदीराम बोस, जैसे नाटकों का मंचन किया गया। डॉ० चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से सम्पादन और डॉ० चतुर्भुज की आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा का प्रकाशन डॉ० प्रियदर्शी ने अपने सम्पादन में किया है। दिसम्बर, 2012 में सरकारी सेवानिवृत्ति। 2010 से डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ० प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। बिहार आर्ट थिएटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक डॉ. प्रियदर्शी इन दिनों मासिक पत्रिका 'राजनीति चाणक्य' को युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं।

आयोजन समिति के सदस्य : गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ० मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ. शैलेश्वर सती प्रसाद, डॉ० किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, उमेश नारायण मिश्र, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, कृष्ण मोहन प्रसाद, मनोरमा देवी, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्रा, आशीष कुमार मिश्र, डॉ० दीनानाथ सहनी, शीलभद्र, नीरज कुमार, हीरालाल, विजय शंकर, राजीव रंजन श्रीवास्तव, रणजीत कुमार, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अनिमा, तूलिका, निधि, सुशील शर्मा, संजय सिंह, अनीस अंकुर, यामिनी, विजय कुमार, सत्य प्रकाश, सूर्य नारायण सूरज, विशाल तिवारी, सुजीत कुमार, राजकुमार सिंह, सुमन पटेल, धर्मेश मेहता, जय प्रकाश, तनुष्का राय, रीना कुमारी, साहिल सिंह, अरविन्द सिंह, सुनीता भारती इत्यादि।

Scanned by CamScanner

संघर्षपूर्ण रंगयात्रा

अपनी आत्मकथा –'मेरी रंगयात्रा' में ऐतिहासिक नाटककार डॉ0 चतुर्भुज ने अपने संघर्षमय जीवन का खुले दिल से उल्लेख किया है। आर्थिक विपन्नता, दकियानूसी विचार वाले समाज में जीवन जीते हुए नाटक और रंगमंच के प्रति उनका झुकाव सदैव बना रहा। प्रस्तुत है यहाँ उस पुस्तक से लिए गये कुछ घटनाओं के अंश। –सम्पादक

हाई स्कूल में शिक्षा : यह लगभग 1938 का समय था जब मैं मिड्ल पास कर गया। जिस नगर में मैं रहता था वहाँ कोई हाई स्कूल नहीं था। मेरे सामने अब कठिनाई थी कि नाम कहाँ लिखाया जाये। निवास स्थान से आठ-दस मील की दूरी पर, खुसरूपुर में 'टौपलिस हाई स्कूल' था। वहाँ पहले से भी कुछ आस-पास के लोग पढ़ते थे जो ट्रेन से आते-जाते थे। पिताजी चाहते थे कि मैं खुसरूपुर हाई स्कूल में नाम लिखाऊँ। माताजी का अपना ख्याल था। वह नहीं चाहती थी कि मैं किसी हाई स्कूल में दाखिला लूं। वह बार-बार यही कहती थी कि मेरा बड़ा लड़का अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के कारण ही मर गया था। बात सही थी। हमारे बड़े भाई साधु प्रसाद का देहान्त वर्षों पहले तभी हुआ था जब वह दसवीं-ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। पिताजी, माताजी के इस दकियानूसी विचार से असहमत थे। वे अपने साथ मुझे खुसरूपुर ले गये और आठवें क्लास में मेरा दाखिला करा दिया। माताजी ने जब यह सुना तब घर में बड़ा रोना-धोना मच गया। मैं अपने अन्य मित्रों के साथ खुसरूपुर की 'डेली पैसेन्जरी' करने लगा।

हाई स्कूल की पढ़ाई, मिड्ल स्कूल से भिन्न थी। यहाँ अंग्रेजी का बोलबाला ज्यादा था। इतिहास-भूगोल जैसे विषय भी अंग्रेजी में ही पढ़ने होते थे। शायद अंग्रेजों के शासन का यह प्रभाव था। हाई स्कूल के हर वर्ग में मेरी प्रतिष्ठा थी। मैं बड़ा मेधावी छात्र समझा जाता था। घर की आर्थिक दशा अच्छी न थी। हाई स्कूल में मुझे आगे चलकर फीस की माफी मिल गई थी। आर्थिक विपन्नता के कारण मैंने कोर्स की दो-चार प्रमुख किताबों के अलावा और कोई भी किताब कभी नहीं खरीदी। ट्रेन से डेली पैसेन्जरी करने के कारण इतना समय भी नहीं मिलता कि मैं होमवर्क कर सकूं। लेकिन शिक्षकों की कृपादृष्टि सदैव मुझ पर बनी रही।

ट्रेन में बिना टिकट आना-जाना होता। अपने पाकेटखर्च के लिए मैं घर से बराबर तीन या चार रुपये फीस ले लिया करता था। घर में किसी को जानकारी नहीं थी कि स्कूल में मेरी फीस माफ है। गाड़ी का समय भी कुछ अजीब था। स्कूल पहुँचने के समय तो गाड़ी का समय ठीक रहता, लेकिन वापस लौटने में गाड़ी शाम सात बजे मिलती, जबकि स्कूल पांच ही बजे समाप्त हो जाता। आखिर दो घंटे प्लेटफॉर्म पर ही चक्कर लगाता रहता क्योंकि समय गुजारने को और कोई दूसरा साधन नहीं था। न ही पास में उतने पैसे होते कि नाश्ता-पानी कर सकूं।

गर्मियों में जब स्कूल का समय सुबह होता तब मुझे आने-जाने में खासी परेशानी होती। जहाँ मेरा घर था, वहाँ से ट्रेन भोर में चार बजे खुलती थी। यानि रात में ही मुझे चलना पड़ता और खुसरूपुर स्टेशन भी भोर में ही पहुंच जाता। फिर प्लेटफॉर्म पर एक-दो घंटे सो जाता। सुबह होने पर उठता। पास के धर्मशाले में जाता और वहीं मुंह-हाथ धोकर स्कूल जाता। मेरे और साथी जो डेली पैसेन्जर थे- गर्मियों में दो-तीन महीनों तक अस्थायी रूप से वहां डेरा लेकर रहते। आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण मैं चाहकर भी ऐसा नहीं कर पाता था। सुबह के स्कूल में लौटने का भी बुरा हाल था। लगभग एक बजे दिन में ट्रेन मिलती जिससे मैं लौट सकता था। इस बीच निराहार रहने के अलावा और कोई चारा नहीं रहता। इस परेशानी में ज्यादातर ऐसा होता कि आने वाली मेरी गाड़ी भोर में अक्सर छूट जाती और मुझे लौट कर घर जाना पड़ता।

मेरे एक शिक्षक थे बृजनन्दन बाबू। बूढ़े और चिड़चिड़े स्वभाव के। वे रेखागणित के शिक्षक थे। उनकी सख्त हिदायत थी कि हर विद्यार्थी को अपने साथ औजार बक्स अर्थात् इन्सट्रूमेंट बॉक्स लाना जरूरी है। चाहकर भी मैं इन्स्ट्रूमेंट बॉक्स खरीद नहीं सका था। नतीजा यह होता कि अपने पीरियड में वे मुझे 'स्टैण्ड-अप ऑन द बेंच' करा देते। बाद में तो मैं इसका ऐसा अभ्यस्त हो गया कि उनकी पीरियड में, उनके आने के पहले ही, मैं स्टैण्ड-अप ऑन द बेंच हो जाता था। मुझ पर उन्हें गुस्सा भी कम नहीं था। वे मुझे निकम्मा विद्यार्थी भी कहने लगे। एक बार गुस्से में आकर उन्होंने मुझे पाँच रुपये फाईन भी कर दिया। फीस तो मैं देता नहीं

Scanned by CamScanner

था-फाईन कहाँ से देता? क्लास टीचर भी झुंझलाये। मामला हेडमास्टर साहब तक पहुंचा। मेरी पेशी हुई। मैंने उनके सामने सब कुछ सच-सच बता दिया कि औजार बाक्स खरीदने के तो मेरे पास पैसे नहीं हैं-मैं फाईन कहाँ से दूं। हेडमास्टर साहब से बृजनन्दन बाबू की कुछ बातें हुई। मेरा जुर्माना माफ हो गया। लेकिन उसके बाद से मेरा बृजनन्दन बाबू के रेखागणित वाले क्लास में जाना बिल्कुल बंद हो गया। इसका खामियाजा मुझे वार्षिक परीक्षा में भोगना पड़ा। मैथ में मुझे सिर्फ पास मार्क्स ही आये थे।

मेरी पॉकेटमारी : एक रोज मैं ट्रेन से स्कूल जा रहा था। जेब में लाल रूमाल में लगभग तीन रुपय बंधे थे जो फीस के नाम पर मेरे साथ थे। कहने के लिए मैं फीस जमा कराने जा रहा था। लेकिन मेरी फीस तो माफ थी। यह मेरा पाकिटखर्च था। ट्रेन में किसी ने रूमाल समेत वह पूरी राशि ग़ायब कर दी। मेरा बुरा हाल था। मैं किसी को कह भी नहीं सकता था कि फीस के रुपये चोरी चले गए। सब जानते थे कि मेरी फीस माफ थी। घर में भी किसी को कुछ नहीं बता सकता था। लेकिन मन में टीस जरूर थी। उस जमाने में तीन रुपये की राशि मामूली नहीं होती थी।

बख्तियारपुर के रेलवे कॉलोनी के बाहर मेरे मकान के तीन-चार मकान के बाद एक मकान में उस शहर का एक नामी पॉकेटमार रहता था। वह ट्रेनों में पॉकेटमारी करता था। मुहल्ले में कोई शिकायत नहीं थी। उसकी पत्नी पर्दे में रहती थी। खुद बराबर कीमती सिल्क का कुरता, महीन धोती, गले में सोने की माला, अंगुली में सोने की अंगूठी, चमकता पम्प शू (जूता) धारण करता। सिगरेट का चेन स्मोकर था। देखकर कोई नहीं कह सकता कि वह पेशे से पाकेटमार है। व्यवहार में निहायत शरीफ, शिष्ट और मृदुभाषी। मैं जब भी उसे देखता, प्रणाम करता और वह मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीष देता। बराबर कहता-बबुआ, कभी जरूरत पड़े तो मुझे कहना। सोचता-सोचता मैं सीधे उसके घर पर पहुँचा। उसने मुझे देखकर आश्चर्य प्रकट किया। मैंने उससे रूमाल समेत रुपये गायब होने की बात बताई। उसने कुछ सवाल किए। मसलन-कौन सी तारीख थी, कौन सी ट्रेन थी आदि। मैंने सब कुछ उसे बता दिया। उसने मुझे कहा कि चौबीस घंटे में तुम्हारा रुमाल मय उस पॉकेटमार के तुम्हारे कदमों में होगा।

दूसरे ही रोज एक कालाकलूटा भीख मांगने वाला लड़का मेरे घर पर उस बड़े पाकेटमार के साथ हाजिर था। उसके हाथ में मेरा वही रुमाल था जिसमें रुपये बंधे थे ज्यों के त्यों। लड़के ने मुझसे माफी मांगी और रुमाल मेरी ओर बढ़ाया। लेकिन उस भीखमंगे की हालत ऐसी थी कि मुझे दया आ गई। रुमाल मैंने रख लिया। पूरी राशि उसे दे दी।

मेरे पूछने पर उस बड़े पाकेटमार ने मुझे बताया कि उसका एक ऑफिस है। पाकेटमारों की ट्रेन में ड्यूटी लगती है। लम्बी यात्रा में एक पाकेटमार अपना माल दूसरे के जिम्मे लगा देता है। ऑफिस में सभी माल जमा होते हैं और ईमानदारी से बंटवारा होता है। सभी पाकेटमार एक-दूसरे को जानते हैं और मदद करते हैं।

परीक्षा फी नहीं जमा करने की भूल : वार फंड में सहायतार्थ जो दो नाटक बिहारी क्लव द्वारा मंचित किये गये (रक्षाबंधन और महाभारत) उनमें स्टेज का बहुत अधिक उत्तरदायित्व मेरे कंधों पर था। इसके कारण मेरी व्यस्तता बढ़ी थी। मैट्रिकुलेशन के लिए मेरी टेस्ट परीक्षा हो चुकी थी और मैं उसमें प्रथम आया था। नाटक की व्यस्तता के कारण मैं यह भूल गया कि युनिवर्सिटी का परीक्षा शुल्क जमा करने की अन्तिम तिथि कब बीत चुकी। नाटक समाप्त होने के बाद मुझे अचानक याद आया कि परीक्षा शुल्क तो उन्होंने जमा किया ही नहीं। ट्रेन से मैं भागता हुआ खुसरूपुर गया। वहाँ क्लास टीचर से मिला तो उन्होंने उत्तर दिया कि बेटा, सभी की फीस युनिवर्सिटी में जमा हो गई। तुमने फीस दी नहीं, इसलिए अब अगले साल का इन्तेजार करो। मैं तो जैसे ऊँचे पेड़ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। कहाँ मैं फर्स्ट हुआ था और कहाँ परीक्षा फीस नहीं देने से मुझे अब एक साल का इन्तेजार करना होगा। समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ। नाटक के शौक ने तो मेरा सर्वनाश ही कर दिया था। मैं स्कूल के बड़ा बाबू से मिला। आरजू मिन्नत करने लगा कि किसी तरह वह मेरी परीक्षा फीस जमा कर लें। नाक पर चश्मा चढ़ा कर उन्होंने अपनी बही निकाली और देख कर कहा कि तुम्हारी फीस युनिवर्सिटी में जमा हो गई है। यह सुन मैं आश्चर्यचकित हुआ। फीस तो मेरी जेब में थी। मैं इस बीच स्कूल आया भी नहीं था। मैंने उनसे कहा कि सर आप मजाक कर रहे हैं। फीस तो मेरी जेब में है। जमा कैसे हो गई? फिर से बही देख लें। उन्होंने चश्मा ठीक करते हुए फिर से जाँच की और मेरे नाम के सामने वसूली दिखलाई। साथ ही रसीद की ऑफिस कॉपी दिखलाई। उन्होंने कहा कि हो सकता है किसी टीचर ने अपनी ओर से तुम्हारी फीस जमा करा दी हो।

यह बात मुझे हैरत में डालने वाली थी क्योंकि आज की तरह उस समय के शिक्षकों का वेतन अपने घर चलाने लायक भी नहीं होता था। फिर किसी लापरवाह छात्र के लिए फीस जमा करना कहाँ तक संभव था। मैं उस दयालु शिक्षक की खोज में लग गया जिन्होंने बिना मेरी जानकारी के मेरी परीक्षा फीस जमा कराई थी। पता चलने पर मैं उस शिक्षक के पास एक अपराधी की तरह

Scanned by CamScanner

पहुँचा और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। साथ ही अपनी जेब से रुपये निकालकर उन्हें देना चाहा। लेकिन उन्होंने रुपये लेने से साफ इन्कार कर दिया और कहा कि दे दिया सो दे दिया। अब उसे वापस लेना क्या? तुम परीक्षा में बढ़िया नम्बर लाओ। यही मेरे लिए संतोष की बात होगी। आज कहाँ हैं वैसे शिक्षक जो अपने विद्यार्थी के लिए अपने अल्प वेतन से उसकी परीक्षा फीस भरें?

आर्थिक तंगी के कारण कॉलेज में पढ़ाई असम्भव : मैं मैट्रिक अच्छे डिवीजन में पास कर गया। अब मेरे सामने समस्या यह थी कि आगे क्या करूँ? पिताजी की ऐसी स्थिति नहीं थी कि वे मुझे आगे पढ़ायें। रिश्तेदारों में कोई ऐसा नहीं था जो मुझे आर्थिक मदद देता। सबसे निकट का कॉलेज भी वहाँ से काफी दूर था जहाँ से डेली-पैसेन्जरी संभव नहीं थी। हाई स्कूल की पढ़ाई तो इसलिए चल गई कि शिक्षकों की मुझ पर कृपा रही और मेरी फीस भी माफ रही। लेकिन कॉलेज के लिए यह असम्भव था। हाई स्कूल के जिन मास्टर साहब ने मेरे लिए मैट्रिक की परीक्षा फीस जमा की थी उन्हें मुझसे ज्यादा चिन्ता थी। उनसे जब मेरी बात हुई तो उन्होंने कहा कि अभी पहला सवाल तो कॉलेज में तुम्हारे चुनाव और ऐडमिशन का है। ऐडमिशन में पचहत्तर रुपये लगने थे। इसकी व्यवस्था तो मैं कर दूँगा। आगे कॉलेज की फीस के लिए भगवान मालिक है। मुझे भी लगा कि ऐडमिशन हो जाना पहली सीढ़ी है। उसके बाद देखा जायेगा।

मास्टर साहब का एक मिड्ल स्कूल था जिसके वे खुद सेक्रेट्री थे। वहाँ उनके स्कूल के भवन का निर्माण होना था। उन्होंने प्रबन्धक कमिटी से तीन महीने के लिए एक अस्थायी व्यक्ति की नियुक्ति की स्वीकृति प्राप्त कर ली। पच्चीस रुपये मासिक वेतन पर। इस तरह उन्होंने अपने स्कूल में मुझे पढ़ाने के लिए तीन महीने के लिए शिक्षक के रूप में रख लिया। अब सवाल था कि उस शहर में मैं रहता कहाँ, खाता कहाँ? इसकी व्यवस्था उन्होंने अपने घर में कर दी। इस तरह तीन महीने काम करने के बाद मुझे जो पचहत्तर रुपये मिले, उससे पटना के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में मेरा नामांकन हो गया। अब सवाल यह था कि पटना में मेरे रहने और खाने पीने की व्यवस्था कहाँ होगी?

मेरे एक चचेरे बड़े भाई थे जो मुझे बहुत मानते थे। पटना में उनका एक मर्दानी डेरा था। वहाँ दो-तीन उनके रिश्तेदार भी रहते थे। सभी मिल जुलकर खाना बनाते थे। वहीं मैं भी रहने लगा। लेकिन यह व्यवस्था मेरे अनुकूल नहीं थी। कॉलेज बहुत सबेरे जाता था। उस समय तक खाना बनता नहीं था। जब मैं देर से लौटता था तब खाने का बचा-खुचा अंश ही मेरे भाग्य में होता। मुझे खाना बनाने आता नहीं था इसलिए मैं उनलोगों की कोई मदद भी नहीं कर सकता था। उपेक्षित भाव का असर मेरी सेहत पर बड़ा खराब पड़ा। तब तक महीना खतम हो गया। कॉलेज की फीस जमा करने का समय आ गया। मैं सोच ही रहा था कि कहीं ट्यूशन वगैरह कर लूं। उसी बीच मैं बीमार पड़ गया। पटना में मेरी देख-भाल कौन करता? मुझे अपने घर लौट आना पड़ा। तब तक कॉलेज से मेरा नाम भी कट गया। पिताजी ने तो पहले ही अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी थी। मैं घर की दुर्दशा देख ही रहा था। इसलिए कॉलेज की तरफ फिर मुँह मोड़ना असम्भव था। नतीजा यह हुआ कि मेरी आगे की पढ़ाई पर पूर्णविराम लग गया।

साकिब इकबाल खाँ को डॉ॰ चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान-2015

केवटी, दरभंगा निवासी श्री साकिब इकबाल खाँ को उनकी नाट्य रिपोर्टिंग और पत्रकारिता के लिए 6वाँ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अवसर पर सन् 2015 में डॉ॰ चतुर्भुज रंग-पत्रकारिता सम्मान से विभूषित करने का निर्णय मगध कलाकार एवं कला-जागरण परिवार की ओर से किया गया है। युवा पत्रकार और नाट्य समीक्षक श्री साकिब इकबाल का जन्म 20 सितम्बर 1990 ई॰ को हुआ। सन् 2011 में पटना विश्वविद्यालय से आपने जन संचार में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। 2012 में आपने भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली से हिन्दी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर में डिप्लोमा प्राप्त किया और दूरस्थ शिक्षा माध्यम द्वारा गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिस्सार से पत्रकारिता एवं जन संचार में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, भोजपुरी और मैथिली भाषाओं पर आपका समान अधिकार रहा है। सन् 2012 में दैनिक हिन्दुस्तान, राँची में संवाददाता के पद पर कार्य करने में आपकी पहचान बनने लगी। फिर दिसम्बर 2013 में दैनिक भास्कर, पटना में योगदान दिया। कला-संस्कृति से जुड़े रहने के कारण आपको कला एवं संस्कृति बीट का दायित्व सौंपा गया। अब तक लगभग पाँच सौ से अधिक नाटकों और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों का कवरेज कर आपने अपनी एक अलग पहचान बना ली है। आपका सदैव प्रयास रहा है कि कला और संस्कृति के विकास के साथ-साथ इससे जुड़े लोगों का भी विकास हो। डॉ॰ चतुर्भुज रंग-पत्रकारिता सम्मान के लिए आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ।

-डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र, अध्यक्ष, मगध कलाकार

Scanned by CamScanner

अंधा युग

11 फरवरी (बुधवार), 2015
प्रस्तुति- बिहार आर्ट थियेटर, पटना

लेखक- डॉ॰ धर्मवीर भारती

परिकल्पना/निर्देशक- सुमन कुमार
सह-निर्देशक- सुनीता भारती

सुमन कुमार, निर्देशक– 15 सितम्बर 1947 को जन्म लेने वाले सुमन कुमार 1962 से रंगमंच से जुड़े। 1966 से आकाशवाणी से जुड़ाव हुआ और 37 वर्षों की सेवा के बाद 2007 में वरीय उद्घोषक के पद से सेवानिवृत्त हुए। कई मंचीय नाटकों में अभिनय और निर्देशन। फिल्म-दूरदर्शन से जुड़कर इन्होंने डिस्कवरी ऑफ इंडिया, मिर्जा गालिब, एक कहानी, अधिकार, विद्रोह, दामुल, भीम भवानी, गाँधी, मेहनत और मंजिल, लोहे के पंख, **भोजपुरी फिल्म**- हमार देवदास, बेटी सदा सुहागन रहऽ, लखेरा, सैंया डरायवर बीवी खलासी में अभिनय। बिहार सरकार द्वारा भिखारी ठाकुर शिखर सम्मान (2014), नाट्य भूषण सम्मान (2001-कटक, उड़ीसा), बी॰बी॰सी॰ द्वारा सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन प्रस्तुतकर्त्ता सम्मान, पंडारक रंग सम्मान (2011), संस्कार भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश), बिहार आर्ट थिएटर सम्मान आदि से सम्मानित।

कथासार : हिन्दी नाट्य साहित्य के क्लैसिक नाटक अंधा-युग में महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या की कथा से लेकर श्रीकृष्ण के मृत्यु तक की कहानी का चित्रण प्रतीकात्मक रूप से किया गया है। नाटक में हर उस युग को अंधा युग कहा गया है जिसमें दुराकांक्षा और स्वार्थ जैसी अंधी प्रवृत्तियों के अधीन होकर मनुष्य, मूल्य और मर्यादा की अवहेलना कर, युद्ध को आमंत्रित करता है। युद्धोपरान्त सबसे पहले मरती है– मानवता और नैतिकता। इसके बाद कोई सैनिक भूशायी होता है। धृतराष्ट्र केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि आत्मिक अंधेपन के भी प्रतीक हैं, जो पुत्र-मोह में मर्यादा और नैतिकता की अनदेखी कर महाभारत युद्ध की भूल को तैयार करते हैं और स्वयं पुत्र-शोक की अग्नि में दग्ध रहते हैं। विह्वल गांधारी इसका दोष कृष्ण को देती है और कृष्ण को शापित करती है। काफी दिनों बाद कृष्ण व्याधा द्वारा मारे जाते हैं।

कलाकार परिचय :

गांधारी-सुनिता भारती, धृतराष्ट्र- उदित कुमार, अश्वत्थामा-उमंग, युयुत्सु-चक्रपाणि पाण्डेय, विदुर-डॉ॰ शंकर सुमन, संजय-मो॰ दानिश (शहादत अली), कृतवर्मा/कृपाचार्य-सुजीत कुमार शर्मा, कृष्ण-नीरज कुमार, वृद्ध याचक-नीरज सिंह, प्रहरी १-वैभव विशाल, प्रहरी २-रंजन कुमार, गूंगा सैनिक-प्रवीण कुमार।

नेपथ्य :

नृत्य निर्देशक-यामिनी, कथा गायन-नितीश कुमार/अलका शर्मा, प्रकाश परिकल्पना-उपेन्द्र कुमार/सुजीत कुमार शर्मा, प्रकाश संचालन-उपेन्द्र कुमार/राजकुमार शर्मा, रूप-सज्जा-अशोक घोष/चंदना घोष, मंच परिकल्पना-अरविन्द कुमार/सुजीत कुमार शर्मा, मंच-निर्माण–हीरा मिस्त्री/ बीरबल/ राजेश/ संजय एवं सर्फुद्दीन, मंच/पात्र-सामग्री–हीरा मिस्त्री/कृष्णा नायडू, ध्वनि प्रभाव–उपेन्द्र कुमार, संगीत प्रभाव–अरविन्द कुमार/उदित कुमार, परिधान–सुजीत कुमार/रंजन कुमार, मीडिया-प्रभारी–मो॰ दानिश और वैभव विशाल।

विशेष आभार

डॉ॰ निहोरा प्रसाद यादव, श्री अरुण कुमार सिन्हा, श्री अशोक घोष, श्री गुप्तेश्वर कुमार

प्रस्तुति-प्रभारी– प्रदीप गांगुली,

प्रस्तुति-नियंत्रक– कुमार अनुपम।

Scanned by CamScanner

री-एक्सप्लोरेशन

(विलियम शेक्सपियर के मैकबेथ नाटक पर आधारित)

12 फरवरी (गुरुवार), 2015

प्रस्तुति- नाट्य दल थिएटर शाइन, कोलकाता

लेखक- हिमाद्री शेखर डे **परिकल्पना/निर्देशक-** सुभोजीत बंद्योपाध्याय

DIRECTOR'S BIO

Suvojit Banerjee (16th July, 1991) : Suvojit is accustomed with the atmosphere of theatre from his childhood. The cultural background of his family to some extent attracted him in the arena of acting. Suvojit's first stage show was in 1998 through a performance in Rabindranath's Chandilika. Thereafter, he started his amateuracting gradually in various drama shows and local programmes. Is the year 2000 Suvojit joined in a Dance-Drama Group named 'Jhankar' and performed in **Alibaba Chalis Chore.** In 2001 he joined in a theatre organization named IFTA (Institute of Factual Theatre Arts) and played a leading character in the drama **'Janala'**. During this time, Suvojit formed a local group consisting of a few local friends named 'Darpan' in the year 2004. In this group, he acted and also directed a number of productions such as **'Vimbadh', Bhooter Mukhe Ram Num, Gao Gabau Goba, Bini Paiser Bhoj, Ajgubi Chal, Khateer Birambana, Ram Dhakka** etc. For the performance in the one act drama 'Bifalay Mulya Ferot' he was awarded with the prize of the **best actor** in 2007. After that, Suvojit captured the prize of **best director** for direction in 'Jaa Hachye Tai' in 2008. Besides, he attended many theatre workshops along with the workshop organized by Paschim Natya Academy.

In the year 2005 Suvojit joined in a cultural organization 'Silpimon' where he performed in the drama **'Rajar Asookh, Tota Kahini, Banglai Gan Gahe** etc. Beside it out side of his group he has worked in some productions like **Na pathano chithi, Socrates, Raja Oedipus, Binodini, Operation 2014, Jonoiker Mrityu** etc. Here he also composed music for production for a couple of years. In his college life, Suvojit formed a new theatre group after closing the functioning of the previous group 'Darpan' and the name of the newly formed group is given as 'Theatre Sine'. Since then, under the direction of Suvojit, it produced a number of short drama such as **'Ja Hachey Tai', Unmona Mon, Bhalo Khabar, Hoitea Sabdhan, Don't Shout, Tomar Dakey** etc. At present, Sri Bandyopadhyay is contemplating to launch William **'Shakespeare's Macbeth.** Beside his own unit, Suvojit has worked in other groups in and around Kolkata on call an actor, these are 'Ankur', 'Natyaudh' and 'Ashoknagar Batyajon', 'Theatre Nandik', Kolkata Eutopian, Sobuj Sanskritik Kendra, kashba Arghya, etc. in his earlier state of this field of drama, Suvojit Received several awards for excellent acting in different character roles. He has also Awarded in the in many Drama Competition around the country for best acting and direction. Recently, he got the **Best Director** Award for his drama 'Don't Shout'. He has recently received **National Natya Bhusan 2012 for Theatre Direction.** On the other hand Suvojit is working with **Birla Academy of Art and Culture** for direction. Apart from the quality of acting and direction in different dramatical performance, Suvojit as a dramatist also is praised by all. He wrote short plays like **'Bhalo Khabar', 'Chore', 'Trash', Dui Bigha Jomi', Hoitey Sabdhan', 'Don't Shout'** and **'Tomar Dakey'** however, with the blessing and cooperation from many theatre personalities Suvojit it looking forward to go ahead with his work.

RE-EXPLORATION IN BRIEF

The piece of play : 'Re-exploration' is nothing but a deep search out. Consisting of a few questions, logical points and some unknown truth. The mission of this play is to make an assemblage of all these things. This drama starts with an individual path based on William Shakespear's tragic pieces as in Macbeth. Here the darkness is very important part where lots of ambition and prediction take birth unconsciously. But here is

Scanned by CamScanner

a conflict between history and the text of Macbeth. 'Re-exploration' is an efforts with a permutation and combination of Shakespear's great classical literature.

This piece of play initiates on the basis of some historical events of Scotland. It is to be noted here that the main source of creation Macbeth by the great novelist was taken probably from the story of King James-Holinshed Chronicle. Who was Macbeth and what was his relevancy? Why the character cropped up on the pen-point of Shakespeare? All these queries are earnestly tried to express in this drama with a blending of fantasy and history towards invention of a new human character. It has to sort out whether this Macbeth himself becomes such a specimen character and becomes killer. The drama begins with a move of honesty which afterwards creates extreme aspiration gradually. There must be some reasons and some decision in his tenure of life.

In this story, duration of night is an important sphere which is surrounded only by horror and sleeplessness. The reason is simply the struggle for existence with a horrifying space of time.

The witches played an important role in this story as because during the period of in England, when "Macbeth" was written there was a great impact of the role of witches in the society and its culture with a deep-rooted superstition among the people. They believe in the evil of such Witches and their prophecy about forthcoming future of human being. But are they really proved to be such element of supernatural or it was simply a psychological impact on our obsession which did not spare the character "Macbeth" in his lifetime journey. In this story 'Re-exploration', each character has got an exposure including their own philosophy and thoughts. This play is not only a political tragedy but also a philosophical tale. The drama ends with raising some questions which, perhaps, Shakespeare himself did not want to answer. It is a strive for mixing up some fantasy with history.

Actors : Subhomay Dey, Aniruddha Biswas, Birendra Balmiki, Sutanu Panda, Soumen Gupta, Lokenath Chakraborty, Nirjhar Das, Manjira Dey, Sourav Banerjee, Arindam Ganguly, Debobroto Paul

Light Designed by- **Shankadip Biswas**

Music Designed by- **Soumen Gupta**

Costume Desinned by- **Manjira Dey**

विचार-गोष्ठी

विषय- 21वीं शताब्दी में ऐतिहासिक नाटकों की प्रासंगिकता

समय- दोपहर 12 बजे

दिनांक- 15 फरवरी, 2015 (रविवार)

स्थान- कालिदास रंगालय, पटना

Scanned by CamScanner

लैला मजनूँ

13 फरवरी (शुक्रवार), 2015

प्रस्तुति- विनोद रस्तोगी स्मृति संस्थान, इलाहाबाद

लेखक- नथाराम शर्मा गौड़

निर्देशक- आतमजीत सिंह

सह निर्देशक- अजय मुखर्जी

कथासार : नत्था राम गौड़ शर्मा द्वारा रचित नौटंकी 'लैला मजनूँ' का आलेख उर्दू जबान में है। कहानी दोहा चौबोला, दौड़ सोरठा गजल कव्वाली, बहरे तबील और पारसी थियेटर की लुप्त प्रायः तर्जों एवं छंदों में लिखी गई है। आज के दर्शकों की आवश्यकता के अनुरूप आलेख काट कर छोटा किया गया है।

मजनूँ का असली नाम कैस था और वह दमिश्क के शाह अमीर का बेटा था और लैला जज्द शहर के सुल्तान की बेटी थी। दोनों मकतब में इकट्ठे पढ़ते थे। मजनूँ लैला से बेहद मुहब्बत करता था। मुहब्बत की जानकारी होने पर लैला के पिता ने लैला का मकतब जाना बंद करा दिया। कैस लैला दीवाना होकर इधर-उधर लैला को ढूँढ़ता जंगल में जा पहुँचता है और लोग उसे मजनूँ कहने लगे थे।

जंगल में शाह नौफिल अपने साथी बहराम के साथ शिकार खेलने जाता है जहाँ उनकी मुलाकात मजनूँ से होती है। नौफिल मजनूँ से वादा करता है कि वह उसकी शादी लैला से करा देगा।

लैला के माँ-बाप उसकी शादी दिल्ली के शाह के बेटे खुशवख्त से करा देते हैं। लैला मजनूँ की याद में तड़पती है और जंगल में मंजनू को खोजने चली जाती है।

पात्र-परिचय

मंच पर

कवि- 1	-	रोहन आनन्द
कवि-2	-	शांकू तिवारी
लैला	-	प्रतिज्ञा शर्मा
मजनूँ	-	पुनर्वसु
लैला के वालिद	-	अभिलाष नारायण
मजनूँ के वालिद	-	अजय मुखर्जी
लैला के वालिद	-	प्रतिमा श्रीवास्तव
नौफिल	-	मो. करीम
बहराम	-	अरुण कुमार श्रीवास्तव
खुशबख्त	-	हिमांशु कुशवाहा
सिपाही-1	-	आदित्य अग्निहोत्री
सिपाही-2	-	शिवांग गुलाटी

मंच परे

संगीत सहयोग एवं हरमोनियम	-	उदयचन्द्र परदेसी
नक्कारा	-	मा. फूलचन्द
ढोलक	-	संजय
प्रकाश	-	सुजाय घोषाल
रूप सज्जा	-	संजय चौधरी
प्रस्तुतकर्ता	-	आलोक रस्तोगी

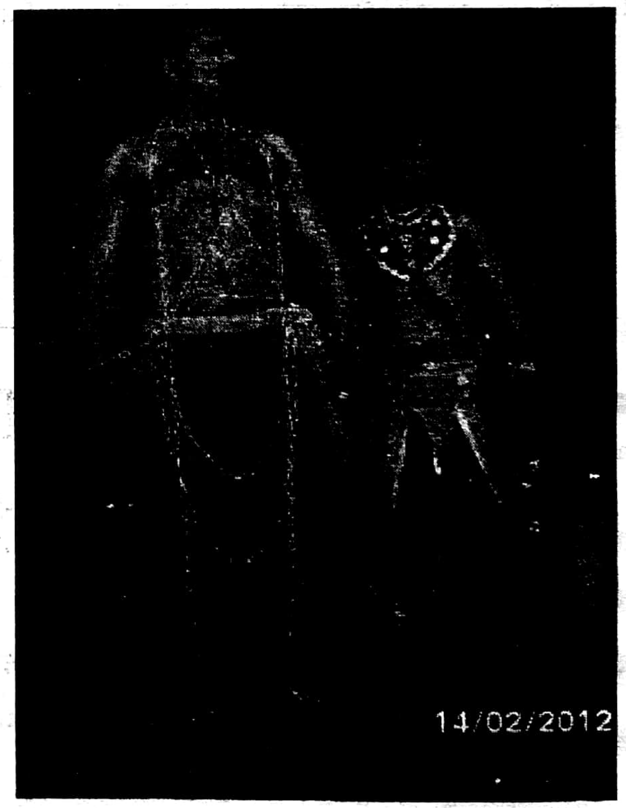

Scanned by CamScanner

भामाशाह

14 फरवरी (शनिवार), 2015

प्रस्तुति- रंगराजन थिएटर प्रोडक्शन, नई दिल्ली

लेखक- छोटू नारायण सिंह

परिकल्पना/निर्देशक- राजन आनंद

निर्देशक, राजन आनन्द- 15 सालों से रंगमंच से जुड़े राजन आनन्द मूलतः पूर्णियाँ, बिहार से हैं। पिछले आठ साल से दिल्ली में रह कर Working & Teaching professionals के साथ थियेटर कर रहे हैं। गुड़गाँव के Kingdom of dream में काम करने का अनुभव। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के साथ लगातार थिएटर। दिल्ली के कई प्रोफेशनल थिएटर ग्रुप के साथ काम करने का अनुभव। साथ ही Costume में Experiment कर रहे हैं। करीब तीस नाटकों में अभिनय। दस से भी अधिक नाटकों का निर्देशन।

निर्देशकीय मत और कथासार- अपने निजी स्वार्थ के लिए Businessman द्वारा तमाम तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं तो भामाशाह सहज ही प्रासंगिक हो उठते हैं। इतिहास अपने आप को दोहराता रहा है। आजादी पूर्व की स्थिति साफ दिखाई पड़ रही है। आवाम के चारों तरफ की हवा से जहर की (युद्ध की बू) बू आ रही है। सड़न दिखने लगी है। रात के अंधेरे में-दिन के उजालों में चीख............पुकार.........और कराहती सांस। धड़कते हुए दिल की धड़कन सुनाई पड़ रही है। भामाशाह चीख रहा है। कोई जवाब नहीं। चारों तरफ सन्नाटा। यह नाटक हिन्दुस्तान की गौरव को बचाए रखने और लुटाने की कहानी है। एक तरफ महाराणा और भामाशाह है- जो देश को बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार बैठे हैं और दूसरी तरफ खुदीराम- जो अपने फायदे के लिए मुगलिया सल्तनत से दिल लगाए बैठे हैं।

Cast on the Stage/ Back Stage

Parul Chauhan	-	Maharani
Tushar Dudeja	-	Bhamashah
Lubhawan Solanki	-	Khudiram
Manish Kumar	-	Taffazzul Husain
Anshul Kumar	-	Maharana Pratap

Rajan Anand, Jyoti Ranjan, Rajnandan Kuman, Sher Singh Chauhan, Vaibhav Vishal, Md. Danish, Sujit Kumar Sharma, Niraj Kumar, Abhishek Kumar

Stage & Light- Upendra Kumar, Raj Kumar Sharma

Scanned by CamScanner

सिराजुद्दौला

15 फरवरी (रविवार), 2015

प्रस्तुति- पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक, पटना

लेखक- डॉ॰ चतुर्भुज

निर्देशक- विजय अनन्द
सह-निर्देशक- डॉ॰ रवि शंकर

निर्देशक- विजय आनन्द : रेलवे की सेवा करते हुए और बिहार कलाश्री से पुरस्कृत श्री विजय आनन्द ने 1996 से अपनी रंगयात्रा प्रारम्भ की। निर्माण कला मंच, इप्टा, प्राची, थियेटर युनिट, किरण कला निकेतन, पुण्यार्क कला निकेतन एवं कला मंच द्वारा प्रस्तुत नाटकों में भूमिकाएँ एवं कई नाटकों का निर्देशन। प्रमुख निर्देशित नाटक- आसमान जोगी, वंदे मातरम्, बिदेसिया, गबर-घिचोर, हारा हुआ सिकन्दर, मेघनाद, शीरी-फरहाद, हीर-रांझा, आदि।

कथावस्तु - राष्ट्रीय एकता पर आधारित सिराजुद्दौला नाटक पलासी युद्ध के कारणों और परिणाम पर आधारित है। इस नाटक में मुर्शिदाबाद के युवा नवाब सिराजुद्दौला के प्रमुख सिपहसालारों द्वारा नवाब के विरुद्ध षडयन्त्र को दर्शाया गया है। मुर्शिदाबाद में व्यापारी बन कर आए अंग्रेजों की किलेबन्दी पर नवाब ने रोक लगा रखी थी। मीरजाफर, मीरन, जगतसेठ, राय दुर्लभ जैसे नवाब के प्रमुख लोगों के साथ मिल कर अंग्रेजों ने लोभ देकर अपने पक्ष में मिलाया। दो तरह के समझौता पत्रों पर हस्ताक्षर कराए गये। अपने सिपहसालारों के विश्वासघात के कारण पलासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय हुई। सिराज कैदखाने में डाला गया और षड्यंत्र से उसकी हत्या करा दी गयी। वृद्ध मीरजाफर को मुर्शिदाबाद की गद्दी पर बैठाया गया।

पात्र-परिचय

सिराजुद्दौला	-	डॉ॰ रविशंकर
मीरजाफर	-	राजेश कुमार
मोहनलाल	-	विजय आनन्द
क्लाईव	-	अमन कुमार
वाटसन	-	अमित कुमार
लुत्फुन्निसा	-	अंजली शर्मा
मीरन	-	नन्दन
द्वारपाल	-	रविशंकर कुमार
नागरिक	-	आनंद कुमार/सुमन कुमार

मंच परे-

वस्त्र विन्यास	-	नरेश सिंह
प्रस्तुति नियंत्रक	-	मनोज कुमार
मेकअप	-	ब्लु आनन्द

Scanned by CamScanner

अंगुलीमाल

16 फरवरी (सोमवार), 2015

प्रस्तुति- एकता नाट्य मंच, भागलपुर

कथा संकलन- निभाष चन्द्र/राजेश कुमार झा

परिकल्पना/निर्देशक- राजेश कुमार झा

निर्देशक, राजेश कुमार झा- श्री रघुनन्दन झा के पुत्र राजेश कुमार झा का जन्म भागलपुर (नगरपाड़ा) में 1972 ई. को हुआ। 1982 से ये नाटक रंगमंच से जुड़े। एन. एस.डी. के वर्क शॉप में भाग लिया। बकरी, फितरती चोर, दुलारी बाई, बिहुला विषहरी, डोमकच, जट-जटिन, सामा चकेवा आदि नाटकों का निर्देशन। संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन विभाग, भारत सरकार से जुनियर फेलोशिप प्राप्त।

कथासार- लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व कोशल के राज प्रसेनजीत थे। न्यायप्रिय एवं प्रजावत्सल। खूंखार डाकू अंगुलीमाल के अत्याचार से वहाँ के नागरिक त्राहिमाम कर रहे थे। मंत्री के परामर्श पर राजा प्रसेनजित ने भगवान बुद्ध का स्मरण किया। भगवान बुद्ध ने कोशल राज्य पधार कर अंगुलीमाल का मार्ग दर्शन किया। अंगुलीमाल बुद्ध का अनुयायी बना।

मंच पर- गौतम बुद्ध- विजय कुमार झा, अंगुलीमाल- निभाष चन्द्र मोदी, मंत्री- सूरज कुमार, सेनापति- रौशन कुमार, सैनिक/ग्रामीण- सज्जन कुमार, विक्रम कुमार।

मंच परे- संगीत-कपिल देव ठाकुर, जनार्दन ठाकुर, **रूप-सज्जा-** सज्जन कुमार, मंच-सज्जा- सूरज कुमार **वस्त्र विन्यास-** विजय कुमार झा, प्रकाश- रौशन, विक्रम।

Scanned by CamScanner

"KENGDU" (केंग्डू)

Institute for Traditional Art & Culture, Manipur

17 February, 2015

Script- L. Kalanjoy Singh

Design & Directed- by S. Birendra Singh

ABOUT THE ORGANISATION

Institution for traditional Arts & Culture, Manipur is a registered Voluntary Cultural Organisation Situated at Imphal East Distric=t, Ukhrul Road 5 kms far ffrom the capital of Manipur heart of the town. It has own preforming troupe in Drama, Martial Arts in the form of stage performer as theatre of which have been giving performance throughout the Country, Manipur has its different= sections for performing Arts & research projects on Manipur Folk Legends. The performing group giving its major productions year by year following with participating in various Festival & Competition.

Synopsis: This is the historical events occur in the series of Manipuri King Charairongba reign in Manipur in the year 1678. This is the historical event occur in the series of Manipuri King Charairongba reign in Manipur in the year 1678 there happen frequency of war invaded by Kabo King of Burma causing inconvenient to the people of Manipur mainly the peoples who were settingin the boarder area getting harashment, torture by the Burmese. Charairongba Presented to Marryhis lonely daughter CHakpa Makhaongambi to Kabo king for stopping the war who were invading against the people of Manipur. Chakpa Makhaongamkbi also have knowledge of sacrificing for the people of Manipur to wed Kabo King if outcome resulting peace. She left her heartest lovePalliba who wasa powerful leader Designated in throne Kingdom of Charairongba even though the war invaded bythe Burmese of which did not stopped rather keeping Palliba Imprinsonment for committing presentation farewell toPalliba as secrecy meeting Chakpa Makhaongambi with Palliba eye witness by Charairongba. Ascontinuing the war over 20 years the troop of Burma leaded by Kengdu Prince of Kabo King only for who arecompel to release from the imprisonment in the battlefield son and father are facing. Palliba killed his son Kengdu realised as his real son who have accompanied with his mother Chakpa Makhaongambi while she was married to Kabo King repentence has come to Palliba suicide himself in the spot. Makhaongambi also suicide in the spot all are finished in smoke in the battlefield.

DIRECTOR'S NOTE:- It is highly essential to analyse the creativity of enemy which cannot bring love at any cost.

CAST & CREDITS

1.	King Charairongba	by S. Birendra Singh
2.	Ningollakpa	by Y. Romeo (Pal) Singh
3.	Manai Sanglakpa	by A. Sardananda Singh
4.	Kengdu	by A. Milankumar Singh
5.	Kabo King	by S. Birendra Singh
6.	Louwaisu	by Ng. Sanjaoba Singh
7.	Chouthap	by A. Surjit Singh
8.	Chakpa Makhaongambi	by Ksh. Phulka Devi
9.	S. Ambrapati Devi	by Mataroi
10.	S. Thoibisana Chanu	by Matatoi

CREDITS

1. Music Composed by K. Narendrsa Singh & E. Somorjit Singh
2. Costume Designed by S.Thoibisana Chanu
3. Properties Designed by Ng. Sanajaoba Singh & A.Milankumar Singh
4. Make Up by Kei Ibotombi
5. Light designe by Somorendro

Produced by Institution for Traditional Art & Culture Khurai Sajor Leikai, Ukhrul Road, Imphal East District, Manipur.

Scanned by CamScanner

बिहार स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

अशोक राजपथ, पटना-800 004

दूरभाष सं०- 0612-2677985, 2675722, 2300262 (फैक्स)

शतावदी वर्ष — गौरवमयी यात्रा

1914 से विश्वास का प्रतीक

हमारी विशेषताएँ :-

1— 100 वर्षों से बिहार राज्य के कृषकों एवं ग्राहकों को समर्पित एवं विनम्र सेवा में समर्पित।

2— बिहार के सभी बैंकों से जमा-साख अनुपात सबसे अधिक।

3— सभी प्रकार की बैंकिंग सेवायें यथा जमा, ऋण वितरण, डी०डी० निर्गमन, साख पत्र, बैंक गारंटी, बिल कलेक्शन आदि की सुविधायें उपलब्ध।

4— भारतीय रिजर्व बैंक/नाबार्ड के पूर्ण नियंत्रणाधीन।

5— सभी शाखाएँ कोर बैंकिंग से सम्बद्ध एवं RTGS/NEFT की सुविधा उपलब्ध।

6— ए.टी.एम. की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु कार्रवाई जारी।

7— अन्य व्यवसायिक बैंकों की तुलना में आकर्षक ब्याज दर एवं वरीय नागरिकों को 0.10% अतिरिक्त ब्याज दर की सुविधा उपलब्ध।

विस्तृत जानकारी के लिए निम्न शाखाओं से सम्पर्क करें :-

पटना स्थित शाखायें :- बाँकीपुर, नया सचिवालय, न्यू मार्केट, कंकड़बाग, नाला रोड, मुसल्लहपुर हाट, मौर्या लोक।

अन्य शहरों में शाखायें :- मोतिहारी, बिहट (बरौनी), छपरा एवं दरभंगा।

हमारा लक्ष्य

'सशक्त सहकारिता, समृद्ध बिहार

(पी०के० सिन्हा)
प्रबंध निदेशक

(रमेश चन्द्र चौबे)
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव की कुछ झलकियाँ

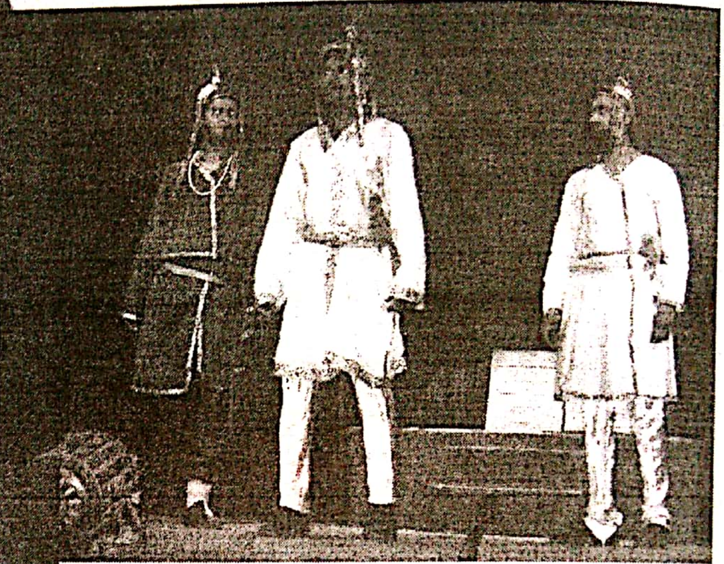

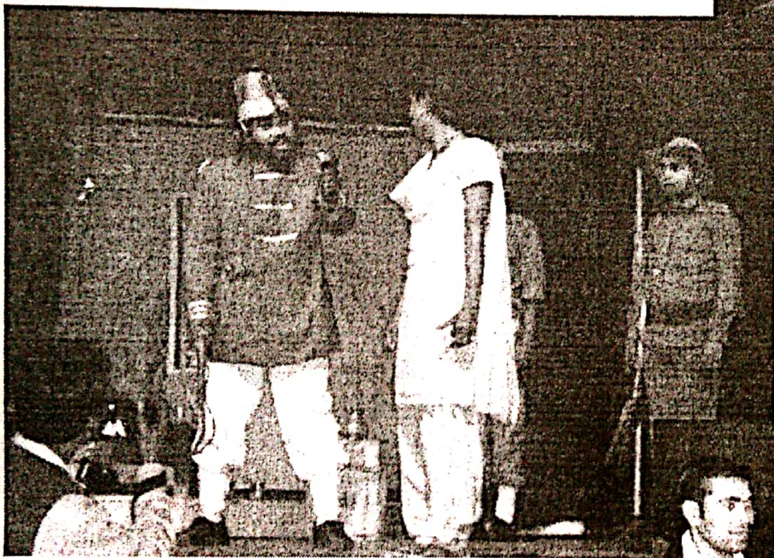

Scanned by CamScanner

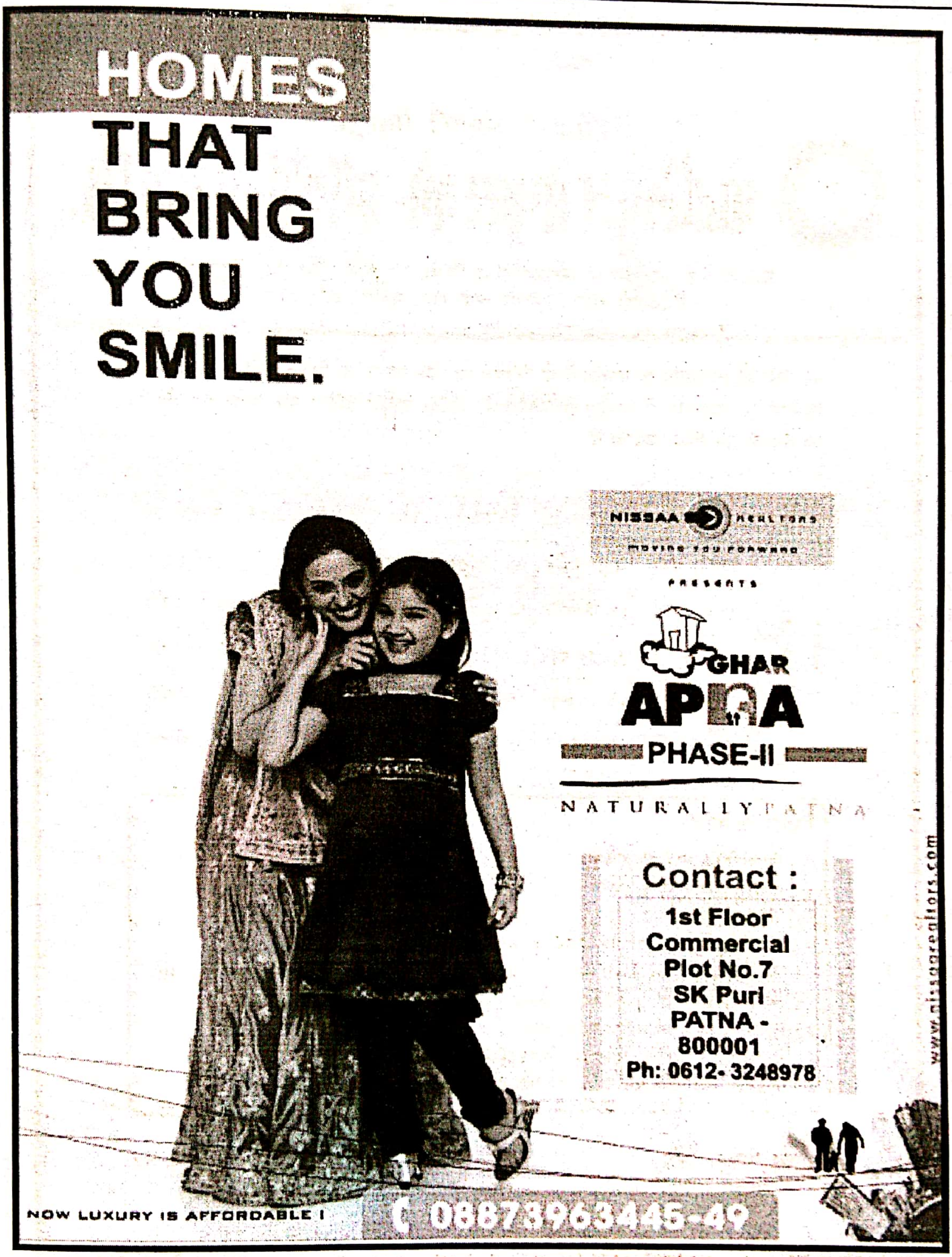

Scanned by CamScanner

"1960 से आपकी सेवा में"

पाटलिपुत्र सेन्ट्रल को- ऑपरेटिव बैंक लि.

आर.बी.आई. लाइसेंस सं.-ग्रा.आ. ऋण वि.डी. सी.सी.बी./पैट-02/2009-10
मदनधारी भवन, एस.पी. वर्मा रोड, पटना- 800 001

यह बैंक बी.आर.एक्ट के प्रावधानों के अंतर्गत 331.96 करोड़ कार्यशील पूंजी के साथ पटना जिले में 20 शाखाओं के माध्यम से ग्राहकों को निरंतर सम्पूर्ण बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहा है। गत वर्ष की उपलब्धि आँकड़ों में-

क्र.	विवरण	31.03.10	31.03.11	31.03.12	31.03.13	31.03.14
1	हिस्सा पूंजी	4.61 करोड़	5.07 करोड़	5.53 करोड़	5.53 करोड़	5.55 करोड़
2	संचित कोष	18.28 करोड़	20.78 करोड़	24.02 करोड़	24.15 करोड़	24.39 करोड़
3	जमा	214.31 करोड़	214.03 करोड़	238.62 करोड़	266.25 करोड़	241.00 करोड़
4	निवेश	198.40 करोड़	184.35 करोड़	212.08 करोड़	200.64 करोड़	170.56 करोड़
5	ऋण एवं अग्रिम	30.08 करोड़	35.20 करोड़	40.98 करोड़	68.72 करोड़	68.61 करोड़

विशेष योजनाएँ-

1. ATM/KCC कार्ड की सुविधा।
2. RTGS/NEFT की सुविधा।
3. DBT की सुविधा।
4. जमा बीमा योजना के अंतर्गत ग्राहकों की जमा राशि सुरक्षित।
5. मात्र 4% ब्याज दर पर कृषक सदस्यों को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से कृषि ऋण की सुविधा।
6. किसान क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए अल्प प्रीमियम पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा की सुविधा।
7. कृषकों के लिए फसल बीमा की सुविधा।
8. ग्राहकों के लिए आवास ऋण, कार आदि अनेक प्रकार की ऋण की सुविधा।
9. बाँकीपुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ शाखा में लॉकर की सुविधा।

राम बिशुन सिंह
उपाध्यक्ष

अशोक कुमार
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

KADRU

KADRU INFRASTRUCTURE PVT. LTD.

"The mission of KADRU is to be amongst most coveted top 10 consulting and outsourcing organization of the country."

We Provide **Services in -**

- **Outsourcing**
- **Consulting**
- **Technology**
- **Industries**

Our speciality is into permanent and Temporary Staffing.

We are also into advertising industry, servicing most of the top corporate in India.

Scanned by CamScanner

Vatayan # 0612-2222920

Scanned by CamScanner